Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUL, DARBHANGA

For – LNMU B. Com part -1 ,Subsidiary PAPER -I

Business Economics and Environment

Lecture -2. Unit- 2. Demand

- ✓ **DIFFERENT BETWEEN LAW OF DEMAND AND ELASTICITY OF DEMAND (मांग के नियम एंव मांग की लोच में परिवर्तन)**
- ✓ **मांग की लोच की परिभाषा**

माँग का नियम यह बताता है कि वस्तु के मूल्य में परिवर्तन होने से किस मांग कि प्रवर्ति किस दशा में होगी लेकिन मांग का नियम यह नहीं बताता है कि वस्तु के मूल्य में अल्प परिवर्तन होने से उसकी माँग में अधिक परिवर्तन क्यों होता है, जबकि अन्य वस्तु के मूल्य में उतने ही परिवर्तन का उसकी माँग पर कुछ प्रभाव नहीं होता। इस आर्थिक घटना कि व्याख्या करने हेतु मार्शल ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक नया विचार दिया, जिसे माँग की लोच का नाम दिया|

अत: मांग की लोच एक प्रकार का मापक है जो हमें मूल्य में परिवर्तन से मांग में होने वाले सभी परिवर्तन का ज्ञान कराता है |

'लोच' से अर्थ हैं, किसी वस्तु में घटने-बढ़ने की शक्ति होने से|

प्रो० बोल्डिंग - किसी वस्तु के मूल्य में एक प्रतिशत परिवर्तन होने पर उस वस्तु की मांग में जो परिवर्तन होता है मांग की लोच कहलाता है |

उदाहरण : यदि किसी व्यक्ति का शरीर गर्म है तो उसे प्राय: कहा जा सकता है की व्यक्ति को बुखार है परन्तु कितना बुखार है ये बताना मुश्किल है अर्थात यदि थर्मामीटर से मापे तो पता चल जायेगा की कितना बुखार है अत: मांग के नियम से केवल यह ज्ञात किया जा सकता है की मूल्य और मांग में परिवर्तन हुआ है लेकिन यह नही बताया जा सकता है की कितना परिवर्तन हुआ है अत: मांग की लोच से उसकी मात्रा भी ज्ञात की जा सकती है |

- ✓ **मांग की लोच की विभिन्न अवधारणये (VARIOUS CONCEPTS OF ELASTICITY OF DEMAND)**

मांग की लोच से सम्बंधित प्रमुख अवधारणये निम्न प्रकार है -

(1) **मांग की कीमत लोच - यानि वस्तु की कीमत में परिवर्तन फलस्वरूप मांग में परिवर्तन**

(2) **मांग की आय लोच - यानि आय के परिवर्तन के फलस्वरूप मांग में परिवर्तन |**

(3) **मांग की आड़ी लोच - यानि सम्बंधित प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप मांग में परिवर्तन |**

✓ माँग की लोच की श्रेणियाँ या मात्राये (DEGREES OF PRICE ELASTICITY OF DEMAND)

(1) **पूर्णतया लोचदार मांग (Perfectly Elastic Demand) – जब किसी वस्तु की मांग उसके मूल्य में बिना किसी परिवर्तन के ही अथवा मूल्य में बहुत कम परिवर्तन होने पर स्वयं ही घटती-बढती रहती है तो इसे पूर्णतया लोचदार मांग कहते है | व्यावहारिक जीवन में कोल्ड ड्रिंक्स तथा आइसक्रीम की मांग के सम्बन्ध में ऐसा देखने को मिलता है |**

(2) **पूर्णतया बेलोचदार मांग Perfectly Inelastic Demand – जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर भी उसकी मांग में कोई परिवर्तन नही होता अर्थात सभी कीमतों पर वस्तु की एक ही मात्रा की मांग की जाती है तो वस्तु की मांग की लोच शून्य के बराबर होती है |**

(3) **लोचदार मांग Elastic Demand** – जब किसी वस्तु की मांग में परिवर्तन ठीक उसी अनुपात में होता है जिस अनुपात में उसकी कीमत में परिवर्तन हुआ है , तब ऐसी वस्तु की मांग को लोचदार मांग कहते है | उदाहरण के लिए , यदि किसी वस्तु की कीमत में 20% वृधि होती है और उसकी मांग भी 20% कम हो जाती है अथवा कीमत में 10% की कमी होने पर मांग में फिर 10% की वृधि हो जाती है तो इस प्रकार की मांग लोचदार मांग कहलाएगी |

1) **मांग की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors Effecting Elasticity of Demand)**

विभिन्न वस्तुओ की मांग की लोच विभिन्न प्रकार की होती है | किसी वस्तु की मांग अधिक लोचदार होती है तो किसी वस्तु की कम | वस्तुतः किसी वस्तु की मांग की लोच अनेक घटकों से प्रभावित होती है , जिसमे से मुख्यत: निम्न प्रकार है -

.

(1) **वस्तु की प्रक्रति** - किसी वस्तु की मांग की लोच उस वस्तु की प्रक्रति पर निर्भर करती है |

इस द्रष्टि से वस्तुओ को तीन भागो में बाटा जा सकता है -

1) अनिवार्य, वस्तुए

2) आरामदायक वस्तुए

3) विलासिता सम्बन्धी वस्तुए

- ✓ अनिवार्य आवश्यकता की वस्तुओ की मांग बेलोच्दर होती है ,क्योंकि अनिवार्य वस्तुओ के उपयोग के बिना मानव जीवन दुष्कर हो जाती है जैसे नमक , अनाज आदि | ऐसी वस्तुओ की कीमत चाहे कुछ भी हो , खरीदना ही पड़ता है |

- ✓ आरामदायक वस्तुओ की मांग लोचदार होती है क्योंकि ऐसी वस्तुओ की मांग में उसी अनुपात में परिवर्तन होती जिस अनुपात में कीमतों में परिवर्तन होता है |

- ✓ विलासिता सम्बन्धी वस्तुओ की मांग अधिक लोचदार होती है क्योंकि ये ऐसी वस्तुए होती है जिनके बिना भी मनुष्य अपना जीवन चला सकता है |

(2) **वस्तु के प्रयोग** - यदि किसी वस्तु को विभिन्न कार्यों में प्रयोग किया जाता है तो एसी वस्तु की मांग लोचदार होगी , परन्तु जिस वस्तु का प्रयोग केवल एक कार्य में ही किया जाता हो उसकी मांग कम लोचदार होती है |

उदाहरण के लिए , बिजली का उपयोग अनेक कार्यो में होता है यदि इसकी डॉ में वृधि हो जाये तो उपभोक्ता इसका प्रयोग कुछ सिमित कार्यो के लिए ही करेगे और परिणामस्वरूप इसकी मांग कम हो जाएगी | इसके विपरीत यदि इसकी दर घाट जाये तो इसका प्रयोग विभिन्न कार्यो में किया जाने लगेगा और परिणामस्वरूप इसकी मांग बढ़ जाएगी |

(3) **उपभोक्ता की आदत** - यदि किसी व्यक्ति को किसी वस्तु के उपभोग करने की आदत पड़ गई है जो उस व्यक्ति के लिए उस वस्तु की मांग को बेलोचदार होगी |
उदाहरण के लिए शराब पीने वाले व्यक्ति के लिए शराब के मूल्य में वृधि का उसकी मांग पर बहुत कम प्रभाव पड़ेगा | क्योंकि शराब के बिना वह अपना जीवन नीरस समझता है |

(4) **उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति** - ऐसी वस्तुओ की मांग जिनका उपयोग केवल धनि वर्ग द्वारा किया जाता है , बेलोचदार होती है | इसके विपरीत ऐसी वस्तुओ की मांग जिनका उपयोग केवल निर्धन वर्ग द्वारा किया जाता है , लोचदार होती है क्योंकि वस्तु के मूल्य में थोडा-सा परिवर्तन भी उनके लिए महत्वपूर्ण होता है |

✓ मांग की लोच का महत्व / उपयोगिता

मांग की लोच का विचार अर्थशास्त्र में सैधानिक व व्यावहारिक दोनों ही द्रष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है | संक्षेप में , मांग की लोच के महत्व को निम्न दो भागो में बांटा जा सकता है |

(1) **वितरण सिधांत में महत्व** - मांग की लोच के द्वारा उत्पति के साधनों को उनका पुरस्कार निर्धारित करने में सहायता मिलती है | उत्पादक, उत्पत्ति के उन साधनों को अधिक पुरस्कार देता है जिनकी मांग की लोच उसके लिए बेलोचदार है तथा उन साधनों को कम पुरस्कार देता है जिनकी लोच उसके लिए लोचदार होती है |

(2) **सरकार के लिए महत्व** - सरकार की द्रष्टिकोण से भी मांग की लोच की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है | सरकार के लिए इसके महत्व को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है -

(i) **कर निति के निर्धारण में सहायक** - सरकार को क्र लगाये समय यह देखना होता है की उस वस्तु की मांग की लोच कैसी है > लोचदार मांग वाली वस्तुओ पर कम क्र लगाया

जाता है अन्यथा वस्तु के मूल्य में वृधि को जन्मे के कारन मांग कम हो जाएगी तथा सरकार को कम, आय प्राप्त होगी इसके विपरीत बेलोचदार मांग वाली वस्तुओ पर अधिक क्र लगाकर आय में वृधि की जा सकती है |

(ii) आर्थिक निति के निर्माण में सहायक - मांग की लोच का विचार सरकार को आर्थिक व् वितीय नीतियों को निर्धारित करने में भी सहायता पहुँचता है | व्यापार चक्रों का नियंत्रण , मुद्रा प्रसार एंव मुद्रा संकुचन के दुष्प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए तथा आर्थिक गतिविधियों में वांछित परिवर्तन लेने के लिए आर्थिक नीतियों का निर्माण मांग की लोच के स्मुच्बित अध्ययन पर ही आधारित है |

(3) अंतरराष्ट्रीय व्यापार में महत्व - किन्हीं दो देशों के बिच 'व्यापार की शर्ते ' मांग की लोच पर निर्भर करती है | यदि हमारे निर्यातों की मांग बेलोच है तो वे वस्तुए विदेशों में ऊँची कीमतों पर बिक सकेगी |

इसके विपरीत यदि हमारे आयातों की मांग हमारे लिए बेलोच है , तो हमें उन वस्तुओ को ऊँची कीमत पर भी खरीदना पड़ेगा |

(4) विनिमय दर के निर्धारण में सहायक - मांग की लोच का विचार सरकार को विनिमय दर के निर्धारण में भी सहायता पहुँचता है | जिन देशों के लिए हमारे देश की मुद्रा की मांग बेलोचदार होती है , उन देशो की मुद्रा के साथ अपने देश की मुद्रा की विनिमय दर ऊँची राखी जाती है |

इसके विपरीत जिन देशो के लिये हमारे देश की मुद्रा की मांग अधिक लोचदार होती है , उन देशो की मुद्रा के साथ अपने देश की मुद्रा के साथ अपने देश की मुद्रा की विनिमय दर नीची रखी जाती है |